महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का श्री वैष्णव शैक्षणिक एवं पारम्परिक न्यास के रजत जयंती समारोह में उद्बोधन

स्थान :- इंदौर दिनांक :- 6 दिसम्बर, 2012 समय :- सुबह 11 बजे

गौरव की बात है कि श्री वैष्णव पारमार्थिक एवं शैक्षणिक न्यास द्वारा संचालित आपकी संस्था श्री वैष्णव इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट, इंदौर प्रबंधन के क्षेत्र में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम सर्वप्रथम आरंभ करने वाली निजी संस्था है। आपकी संस्था वर्ष 2012 रजत जयंती वर्ष के रूप में मना रही है। मेरी ओर से संस्था के समस्त पदाधिकारी, प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

मुझे यह देखकर आनंद व आश्चर्य हो रहा है कि न्यास के वयोवृद्ध एवं वरिष्ठ न्यासी श्री बाबूलालजी बाहेती 94 वर्ष की उम्र में भी सक्रिय है और अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं। वे हम सभी के लिए प्रेरणादायक हैं।

मैं इस अवसर पर संस्था के संस्थापक निदेशक श्री डी.पी. मिश्रा का भी अभिनंदन करता हूं जो आज भी संस्था को अपना मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

मुझे बताया गया है कि श्री वैष्णव प्रबंध संस्थान को हाल ही में यूजीसी नेक द्वारा “ए” ग्रेड प्रदान की है और ट्रस्ट अब प्रायवेट यूनिवर्सिटी “श्री वैष्णव विद्यापीठ” आरम्भ करने के लिए प्रयासरत है। मेरी शुभकामनाएं।

किसी भी व्यावसायिक शैक्षणिक संस्था का कार्य केवल संरचना उपलब्ध करवाना मात्र नहीं है,प्रबंधन एवं कम्प्यूटर साइंस को रोजगारोन्मुखी बनाना भी आवश्यक है। पाठ्यक्रम को और अधिक सामयिक बनाने की आवश्यकता है। तभी आप कॉरपोरेट्स की आवश्यकता पूरी कर सकते हैं।

आज आवश्यकता है कि प्राध्यापक अधिक से अधिक कान्फ्रेंस, सम्मेलन और वर्कशाप एवं शोध कार्य करें जिससे शिक्षा के स्तर में सुधार आए।

बावजूद इसके कि भारत विकसित राष्ट्रों के समकक्ष होने की ओर बढ़ रहा है।

पर्याप्त संरचना एवं शोधकार्य के अभाव में विश्व के श्रेष्ठतम विश्वविद्यालयों में भारत का नाम नहीं है। आवश्यकता है कि विद्यार्थी अंतर्राष्ट्रीय स्तर का ज्ञान प्राप्त करें।

इस सदी में हमें बहुत से तनावों और द्वंदों से गुजरना पड़ेगा जो वैश्विक और स्थानीय, परंपरा और आधुनिकता, आध्यात्मिकता और भौतिकता के बीच होंगे। इसलिए इस सदी की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि इन तनावों के बीच विद्यार्थियों को संतुलन बनाए रखने में मददगार हो।

मैं संस्था के संचालकों एवं प्राध्यापकों को कहना चाहता हूं कि आज के युवा अपने वर्तमान और भविष्य के प्रति ज्यादा जागरूक एवं चिन्तित हैं। उनके सामने कई सवाल हैं जिनके उत्तर उन्हें नहीं मिल रहे हैं। ये सवाल हें शिक्षा की प्रासंगिकता, गुणवत्ता एवं रोजगार को लेकर।

साम्प्रदायिकता, आतंकवाद तथा पारिवारिक एवं सामाजिक हिंसा हमारी प्रगति को अवरूद्ध कर रहे है। गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा हमारी दूसरी चुनौती है। आप प्रबंधन, विज्ञान तकनीक अथवा अन्य किसी भी क्षेत्र के हो, अपनी कर्मठता एवं प्रतिभा के बल पर ही इन समस्याओं से उबर सकते हैं।

शिक्षा हर समाज ओर राष्ट्र की नींव होती है। हमारा वर्तमान और भविष्य हमारी शिक्षा पद्धति पर आधारित है। शिक्षा का अंतिम पड़ाव श्रेष्ठ एवं जिम्मेदार नागरिक बनना-बनाना है। यही रास्ता हमें शांति और विकास की ओर ले जाएगा। आईए, आप सभी रजत जयंती वर्ष में संकल्प लें कि आप जीवन में संस्कारनिष्ठ बनेंगे।

जय हिन्द।

file=e:/bhasan/shri veshnav smaroh indore 06-12-12.doc for approval to ADC 30.11.12 6.00pm